इकाई - 06 पाठयोजना निर्माण

पाठयोजना से अभिप्राय - किसी कार्य की सफलता अथवा विफलता उस कार्य को भली प्रकार से सम्पन्न करने की योजना पर काफी हद तक निर्भर करती है। यदि कार्य को पूर्व चिन्तन के आधार पर नियोजित तरीकों से किया जाये तो उससे श्रम एवं समय का सदुपयोग होता है। अतः जो शिक्षण पहले से ही नियोजित होता है, वह निःसन्देह सफल होता है।

एक शिक्षक को पढ़ाने से पूर्व निम्न तथ्यों पर पूर्व चिन्तन करना चाहिए -

(i) विषय-वस्तु को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाये, कि विद्यार्थी सीखने में तत्पर हो सकें।
(ii) विषय-वस्तु के अध्यापन में कौन-कौन सी शिक्षण सहायक सामग्री काम में ली जावे, तथा उसका उपयोग कब किया जावेगा
(iii) पाठ्यवस्तु में कौनसी बातें पहले तथा कौनसी बातें बाद में पढ़ाई जाएं ?
(iv) शिक्षण के उपरान्त कौन-कौन से व्यवहारगत परिवर्तन सम्भव हो सकेंगे ?
(v) शिक्षक-शिक्षार्थी क्रियाओं का स्तर तथा प्रकार क्या हों ?

जब शिक्षक उक्त प्रश्नों पर मनन करता है तथा इन पर चिन्तन करने के उपरान्त एक कालांश के शिक्षण की लिखित योजना बनाता है उसे पाठयोजना कहते हैं।

पाठयोजना की परिभाषाएँ :-

(i) डेवीस के अनुसार - शिक्षण-व्यवस्था के सभी पक्षों के व्यावहारिक रूप का आलेखन ही पाठयोजना है।

(ii) बोर्सिंग के अनुसार → शिक्षण क्रियाओं तथा उद्देश्यों के आलेखन को पाठयोजना कहते हैं।

(iii) बाईनिंग एवं बाईनिंग के अनुसार - दैनिक पाठयोजना के उद्देश्यों को परिभाषित करना, पाठ्यवस्तु का चयन

Scanned by CamScanner

(2) करना, उसे क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करना और प्रस्तुतीकरण की विधियाँ तथा प्रक्रियाओं का निर्धारण करना है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि पाठयोजना समग्र सिद्धान्त के अनुसार प्रत्यक्षीकरण एवं सामान्यीकरण के चरणों के अनुरूप निर्मित की जाती है।

पाठयोजना की आवश्यकता

(I) शिक्षण-कार्य को योजनाबद्ध ढंग से सुसाध्य बनाने के लिए।
(II) शिक्षण-कार्य को प्रभावी बनाने हेतु।
(III) शिक्षण-कार्य को रोचक बनाने के लिए।
(IV) पाठयोजना शिक्षण के समय में पथ प्रदर्शन करती है।
(V) कक्षा में शिक्षण की क्रियाओं तथा सहायक सामग्री की पूर्व जानकारी प्राप्त होती है।
(VI) कक्षा-शिक्षण के समय शिक्षक के विस्मृति की सम्भावनाएँ कम हो जाती हैं। निर्धारित पाठ्यवस्तु के सभी तत्वों का विवेचन किया जाता है।
(VII) शिक्षण-सहायक सामग्री के प्रयोग के स्थल, शिक्षण विधि तथा प्रविधियों का निर्धारण किया जाता है।
(VIII) शिक्षण-क्रियाओं का अधिगम स्वरूपों से सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।
(IX) शिक्षण-उद्देश्यों तथा परीक्षण परिस्थितियों का निर्धारण होता है।
(X) शिक्षक को परीक्षण के लिए पाठयोजना कक्षा की क्रियाओं के लिए रूपरेखा प्रदान करती है।
(XI) छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर कक्षा की क्रियाओं की व्यवस्था करने में पाठयोजना सहायक होती है। पाठयोजना नवीन परिस्थितियों का परीक्षण करती है।

Scanned by CamScanner

(3)

उत्तम पाठयोजना के गुण

जो पाठयोजना शिक्षक को निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में सफलता प्रदान करे, वही पाठयोजना का सर्वोत्तम गुण है। उत्तम पाठयोजना के गुणों को निम्न लिखितानुसार परिभाषित कर सकते हैं।

(I) पाठयोजना लिखित होनी चाहिए।
(II) सम्पूर्ण पाठ की रूपरेखा या सारांश लिखित होना चाहिये
(III) प्रत्येक सोपान का क्रम एवं समय निर्धारित होना चाहिए।
(IV) इसमें सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्य स्पष्ट रूप से लिखे जाने चाहिएँ।
(V) शिक्षक एवं छात्रक्रियाओं का वर्णन होना चाहिए।
(VI) इसमें नवीन ज्ञान को पूर्वज्ञान पर आधारित किया जाना चाहिए।
(VII) इसमें छात्रों द्वारा किए गये अर्जित ज्ञान का नवीन ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित किया जाना चाहिए।
(VIII) इसमें पाठ्य-विषय और छात्र-क्रियाओं का चयन एवं संगठन उचित प्रकार से होना चाहिए।
(IX) पाठयोजना में छात्रों से पूछे जाने वाले सभी प्रश्नों को अंकित किया जाना चाहिए।
(X) शिक्षण-विधियाँ रोचक और प्रेरणात्मक होनी चाहिएँ।
(XI) शिक्षण-विधियों का उल्लेख होना चाहिए।
(XII) प्रस्तुत उदाहरणों का समावेश होना चाहिए।
(XIII) शिक्षण के लिए प्रयोग की जाने वाली सहायक सामग्री का स्पष्ट विवरण होना चाहिए।
(XIV) इसमें छात्रों को कक्षा-कार्य और गृहकार्य दिये जाने की व्यवस्था होनी चाहिए।
(XV) छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए परीक्षात्मक अभ्यासों की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

Scanned by CamScanner